MAKTABA TUL MADINAH

Imame Husain Ke Waqiat (Hindi)

हफ़्तावार रिसाला : 208
WEEKLY BOOKLET : 208

इमामे हुसैन के वाक़िआत

सफ़हात 20

मज़ारे मुबारक इमामे हुसैन رضی اللہ عنہ

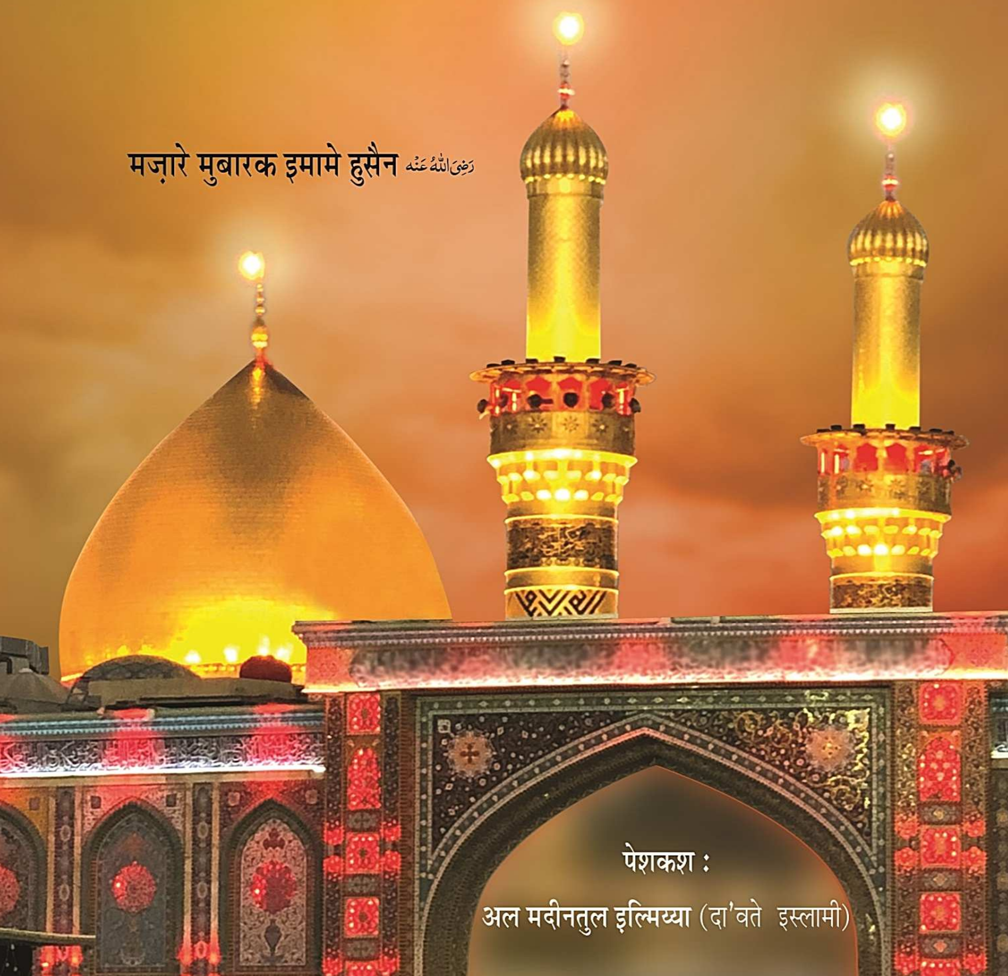

पेशकश :

अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط

اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा । दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले । (مُسْتَطْرَف ج ١ ص ٤٠ دارالفكر بيروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये ।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

नामे रिसाला	:	**इमामे हुसैन** رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه **के वाक़िआत**
पहली बार	:	मुह़र्रमुल ह़राम **1443** हि., अगस्त **2021** ई.
ता'दाद	:	
नाशिर	:	**मक्तबतुल मदीना**

मदनी इल्तिजा : किसी और को येह रिसाला छापने की इजाज़त नहीं है ।

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

येह रिसाला "**इमामे हुसैन** رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ **के वाक़िआत**"

मजलिसे **अल मदीनतुल इल्मिय्या** (दा'वते इस्लामी) ने **उर्दू** ज़बान में मुरत्तब किया है। ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है।

इस रिसाले में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़लती पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, Email या SMS) मुत्तलअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबिता : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)
मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अहमदआबाद-1, गुजरात
MO. 98987 32611 • E-mail :hind.printing92@gmail.com

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन इस ने न उठाया (या'नी उस इल्म पर अ़मल न किया)। (تاریخ دمشق لابن عساکر ج ۵۱ ص ۱۳۸ دارالفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़्ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक्तबतुल मदीना** से रुजूअ़ फ़रमाइये।

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ के वाक़िआत

दुआए अ़त्तार : या रब्बल मुस्त़फ़ा ! जो कोई 18 सफ़ह़ात का रिसाला : **"इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ के वाक़िआत"** पढ़ या सुन ले उसे ह़ज़रते इमाम हुसैन (رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ) की मुबारक सीरत पर चलने की तौफ़ीक़ अ़त़ा कर और उसे जन्नतुल फ़िरदौस में बे हिसाब दाख़िला नसीब फ़रमा ।

اٰمین بجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ والہٖ وسلم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

मुसल्मानों के चौथे ख़लीफ़ा, ह़ज़रते मौलाए काएनात, अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ फ़रमाते हैं : जब किसी मस्जिद के पास से गुज़रो तो रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक पढ़ो ।

(فضل الصلاۃ علی النبی للقاضی الجہضمی، ص70، رقم:80)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

"शहीदे करबला" के नव हुरूफ़ की निस्बत से 9 हिकायाते इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ

﴾1﴿ शाने इमामे हुसैन

जन्नती इब्ने जन्नती, सह़ाबी इब्ने सह़ाबी, नवासए रसूल ह़ज़रते इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ की मौजूदगी में एक मरतबा ह़ज़रते अमीर मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ की मह़फ़िल में आ'ला नसब, इ़ज़्ज़तो वजाहत वाली बुज़ुर्ग

हस्तियों का ज़िक्र हो रहा था। हज़रते अमीर मुआविया رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने फ़रमाया : क्या तुम लोग जानते हो कि वोह शख़्स कौन है जो अपने वालिदैन, दादा, दादी, नाना और नानी, ख़ाला और ख़ालू के ए'तिबार से लोगों में सब से ज़ियादा इज़्ज़त वाला है ? लोगों ने अ़र्ज़ की : आप हम से ज़ियादा जानते हैं। येह सुन कर हज़रते अमीर मुआविया رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने इमामे आली मक़ाम, इमामे अ़र्श मक़ाम, हज़रते इमाम हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ का हाथ मुबारक पकड़ कर फ़रमाया : वोह शख़्सिय्यत येह हैं, इन के अब्बू मौला अ़ली मुश्किल कुशा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ हैं, अम्मीजान, हज़रते बीबी फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की साहिब ज़ादी हैं, इन के नानाजान, मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हैं, नानीजान हज़रते बीबी ख़दीजतुल कुब्रा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا हैं, इन के चचाजान हज़रते जा'फ़रे तय्यार رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ हैं, और फूफीजान हज़रते हाला बिन्ते अबी तालिब और मामूं हज़रते क़ासिम رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ हैं जो **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साहिब ज़ादे हैं और इन की ख़ाला हज़रते ज़ैनब बिन्ते **रसूलुल्लाह** हैं। येह सुन कर मजलिस में मौजूद तमाम लोगों ने कहा : आप ने बिल्कुल सच फ़रमाया है। (المستجاد من فعلات الاجواد، 26/1)

अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

क्यूं न हो रुत्बा बड़ा अस्हाबो अहले बैत का मुस्तफ़ा उन के, ख़ुदा अस्हाबो अहले बैत का
आलो अस्हाबे नबी सब बादशह हैं बादशाह मैं फ़क़त अदना गदा अस्हाबो अहले बैत का
या इलाही ! शुक्रिया अ़त्तार को तू ने किया शे'र गो, मिद्हत सरा अस्हाबो अहले बैत का

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

﴾2﴿ बड़े भाई का अदब

सख़ी इब्ने सख़ी, शहज़ादए अ़ली, हज़रते इमामे ह़सन मुज्तबा

رَضِیَ اللہُ عَنْہ से एक मरतबा किसी शख़्स ने कुछ मांगा तो आप ने फ़रमाया : तीन सूरतों के सिवा किसी से मांगना जाइज़ नहीं (1) बहुत ज़ियादा क़र्ज़ (2) फ़क़ीर बना देने वाली ग़ुर्बत (3) या बहुत ज़ियादा ज़मान। उस शख़्स ने अ़र्ज़ की : मैं इन में से एक वज्ह से आया हूं। आप رَضِیَ اللہُ عَنْہ ने उस के लिये सो दीनार (या'नी सोने के सिक्के देने) का हुक्म फ़रमाया। फिर उस ने इमामे आ़ली मक़ाम ह़ज़रते इमामे हुसैन رَضِیَ اللہُ عَنْہ से कुछ मांगा तो आप ने भी भीक मांगने के मुतअ़ल्लिक़ उस से वोही बात फ़रमाई जो ह़ज़रते इमामे ह़सन رَضِیَ اللہُ عَنْہ ने फ़रमाई थी। उस ने वोही जवाब दिया जो वोह ह़ज़रते इमामे ह़सन رَضِیَ اللہُ عَنْہ को दे चुका था। शहीदे करबला ह़ज़रते इमामे हुसैन رَضِیَ اللہُ عَنْہ ने उस से फ़रमाया : भाईजान ने क्या अ़ता फ़रमाया है ? उस ने अ़र्ज़ किया : 100 दीनार। आप ने बड़े भाई से बराबरी को ना पसन्द फ़रमाते हुए उसे निनानवे (99) दीनार (या'नी सोने के सिक्के) अ़ता फ़रमा दिये। फिर वोह शख़्स ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللہُ عَنْہُمَا के पास आया और सुवाल किया। आप رَضِیَ اللہُ عَنْہ ने बिग़ैर कुछ पूछे उसे सात दीनार दे दिये। उस ने ह़ज़रते इमामे ह़सन और ह़ज़रते इमामे हुसैन رَضِیَ اللہُ عَنْہُمَا के पास जाने और उन की अ़ता का सारा वाक़िआ़ बयान किया तो ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللہُ عَنْہ ने फ़रमाया : "तअ़ज्जुब है तुझ पर ! तू मुझे उन की मिस्ल बना रहा है, बेशक वोह दोनों तो इ़ल्म और माल के दरिया हैं।" (عیون الاخبار، جزء3، ص158) **अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।** اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّیْن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

सख़ावत भी तेरे घर की इनायत भी तेरे घर की

तेरे दर का सुवाली झोलियां भर भर के लाता है

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللہُ علٰی مُحَمَّد

बड़ा भाई वालिद की जगह होता है

ऐ आशिक़ाने सहाबा व अहले बैत ! इमामे आ़ली मक़ाम, इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ का अपने प्यारे प्यारे भाईजान इमामे ह़सन मुज्तबा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से मह़ब्बत का अन्दाज़ और अदबो ता'ज़ीम तो देखिये । काश ! हम भी अपने बड़ों का अदब करें । इस्लाम में बड़े भाई का बड़ा मक़ाम है, जिस त़रह़ छोटे भाई को बड़े भाई का एह़तिराम करना चाहिये इसी त़रह़ बड़े भाई को छोटे भाई से शफ़्क़तो मह़ब्बत भरा सुलूक करना चाहिये क्यूं कि बड़ा भाई वालिद की जगह होता है । मुस्त़फ़ा जाने रह़मत صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रह़मत निशान है : "बड़े भाई का ह़क़ छोटे भाई पर ऐसा है जैसे वालिद का ह़क़ औलाद पर ।" (شعب الایمان،6/210،حدیث:7929) अगर घर में सभी एक दूसरे के हुक़ूक़ का ख़याल रखें और उन से अदबो एह़तिराम के साथ पेश आएं तो घर में प्यार भरा माह़ोल बन सकता है, आज कल घरेलू झगड़ों का एक बहुत बड़ा सबब येह भी है कि एक दूसरे के हुक़ूक़ का ख़याल दिल से ख़त्म होता जा रहा है, बड़े की छोटे पर शफ़्क़त नहीं तो छोटे को बड़े का एह़तिराम नहीं, नतीजतन घरों का माह़ोल हमारे सामने है, इसी त़रह़ बड़ी बहन को छोटी बहन से और छोटी बहन को बड़ी बहन के साथ मह़ब्बत भरा सुलूक करना चाहिये वरना वालिदैन के जीते जी तो जैसे तैसे वक़्त गुज़र जाता है लेकिन वालिदैन की वफ़ात या अपनी शादियों के बा'द सगे भाई बहनों में भी बड़ी दूरियां पैदा हो जाती हैं । घर में प्यार व मह़ब्बत भरा माह़ोल बनाने में वालिदैन का किरदार बहुत ज़ियादा अहम्मिय्यत रखता है अगर मां बाप बच्चों को बचपन ही से एक दूसरे से प्यार व मह़ब्बत करने, एक दूसरे का ख़याल रखने के बारे में नरमी व शफ़्क़त से समझाते रहेंगे तो اِنْ شَآءَ اللّٰہ الْکَرِیْم बचपन से ही घर में अच्छा माह़ोल बनेगा और **"घर अम्न का गहवारा"** बना रहेगा ।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

नवासए रसूल, ह़ज़रते इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ का अपने बड़े भाई से मह़ब्बत का एक और ज़ौक़ अफ़्ज़ा वाक़िआ़ पढ़िये और झूमिये :

﴾3﴿ बड़े भाई से मह़ब्बत का निराला अन्दाज़

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ फ़रमाते हैं : मुझे पता चला कि इमामे ह़सन और इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا के दरमियान किसी शकर रन्जी (या'नी मा'मूली नाराज़ी जो कभी दोस्तों में भी हो जाती है) की वज्ह से बातचीत बन्द है तो मैं ने इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से अ़र्ज़ की : लोग आप दोनों ह़ज़रात को अपना मुक़्तदा (या'नी पेश्वा) समझते हैं। आप अपने बड़े भाईजान के पास जा कर उन से बातचीत कीजिये क्यूं कि आप उन से उ़म्र में छोटे हैं। इस पर ह़ज़रते इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने फ़रमाया : अगर मैं ने **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का येह फ़रमान न सुना होता कि "सुल्ह़ में पहल करने वाला जन्नत में भी पहले जाएगा" तो मैं ज़रूर उन की ख़िदमत में ह़ाज़िर होता मगर मैं येह पसन्द नहीं करता कि उन से पहले जन्नत में जाऊं।

सह़ाबिये रसूल ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ फ़रमाते हैं कि मैं इमामे ह़सन मुज्तबा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ के पास ह़ाज़िर हुवा और उन्हें सारा वाक़िआ़ बताया तो इमामे ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने फ़रमाया : "صَدَقَ اَخِیْ" या'नी "मेरे भाई ने सच कहा" फिर आप खड़े हुए और अपने भाई ह़ज़रते इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ के पास आ कर उन से गुफ़्त्गू फ़रमाई। (ذخائر العقبی، ص238)

नौ निहाले चमने मुस्त़फ़वी मुर्तज़वी   जिसे क़ुदरत ने चुना ज़ीनते जन्नत के लिये

(दीवाने सालिक, स. 92)

ऐ आ़शिक़ाने सह़ाबा व अहले बैत ! इस वाक़िए़ में जहां इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की बड़े भाई से कमाल मह़ब्बत का बयान है वहीं एक बड़ा अहम पैग़ाम भी है कि सब से ज़ियादा अह़ादीसे पाक रिवायत करने वाले

सह़ाबिये रसूल ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने दोनों शहज़ादों की ख़िदमतों में ह़ाज़िरी दे कर सुल्ह़ की सूरत फ़रमाई, सह़ाबए किराम عَلَیۡہِمُ الرِّضۡوَان अहले बैते अत़्हार के बड़े ख़ैर ख़्वाह व ग़म गुसार थे, यूंही अहले बैते अत़्हार सह़ाबए किराम पर बड़े शफ़ीक़ो मेह्रबान थे, अह़ादीसे मुबारका में इस की कई मिसालें मौजूद हैं।

नाउ हैं आले नबी नज्म हैं अस्ह़ाबे रसूल *اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہ कि मुज़्दा है येह उम्मत के लिये*

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

﴾4﴿ सह़ाबए किराम और शहज़ादए आ़ली मक़ाम की आपस में मह़ब्बत का बड़ा प्यारा वाक़िआ

ह़ज़रते मुह़म्मद बिन अ़ली बिन हुसैन رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہِم फ़रमाते हैं कि (मेरे दादाजान) इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ अपनी ज़मीन पर जाने के लिये पैदल तशरीफ़ ले जा रहे थे कि रास्ते में सह़ाबिये रसूल ह़ज़रते नो'मान बिन बशीर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ मिले वोह अपने ख़च्चर पर सुवार थे, आप अपनी सुवारी से उतर गए और सुवारी को ह़ज़रते इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की ख़िदमत में पेश किया और अ़र्ज़ की : "ऐ अबू अ़ब्दुल्लाह! आप सुवार हो जाइये।" इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ सुवार न हुए तो ह़ज़रते नो'मान बिन बशीर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने बहुत इसरार किया और क़सम दी कि आप इस पर ज़रूर सुवार हों। इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ उन के पुरज़ोर इसरार और क़सम देने की वज्ह से मान गए और फ़रमाया : मुझे येह पसन्द नहीं, आप ने मुझे मशक़्क़त में डाल दिया है। आप सुवारी के अगले ह़िस्से पर सुवार हों, मैं पिछले ह़िस्से पर सुवार होउंगा क्यूं कि मैं ने अपनी अम्मीजान ह़ज़रते बीबी फ़ात़िमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا से प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का येह फ़रमान सुना है : "सुवारी के अगले ह़िस्से पर सुवार होने का ह़क़दार उस का मालिक होता है।" येह सुन कर ह़ज़रते

नो'मान बिन बशीर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने कहा : **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की शहज़ादी ने सच फ़रमाया, मैं ने अपने अब्बूजान हज़रते बशीर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से ऐसा ही सुना जैसा हज़रते बीबी फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا ने इर्शाद फ़रमाया और **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह भी इर्शाद फ़रमाया : اِلَّا مَنْ اَذِنَ या'नी सिवाए उस के जिस को सुवारी का मालिक इजाज़त दे दे। येह सुन कर हज़रते इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ आगे सुवार हो गए और हज़रते नो'मान बिन बशीर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ पीछे सुवार थे। (معجم کبیر، 22/414، حدیث:1025)

जो कि है दिल से जिगर पारए ज़हरा पे निसार ख़ुल्द है उस के लिये और वोह जन्नत के लिये

﴾5﴿ मक़ामे इमामे हुसैन

एक मरतबा एक जनाज़े में शिर्कत के बा'द इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ वापस तशरीफ़ ला रहे थे तो आप को थकावट महसूस हुई और आप एक जगह आराम फ़रमाने के लिये कुछ देर बैठ गए। हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ अपनी चादर से इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ के मुबारक पाउं से मिट्टी वग़ैरा साफ़ करने लगे तो इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने उन्हें मन्अ़ फ़रमाया। इस पर हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने अ़र्ज़ की : **अल्लाह** पाक की क़सम ! आप की जो अ़ज़मतो शान मैं जानता हूं अगर लोगों को पता चल जाए तो वोह आप को अपने कन्धों पर उठा लें। (تاریخ ابن عساکر، 14/179 مختصر، تاریخ الاسلام للذہبی، 2/627)

- हर सहाबिये नबी !............... जन्नती जन्नती
- हज़रते सिद्दीक़ भी !............... जन्नती जन्नती
- और उ़मर फ़ारूक़ भी !........... जन्नती जन्नती
- उ़स्माने ग़नी !....................... जन्नती जन्नती
- फ़ातिमा और अ़ली !.............. जन्नती जन्नती
- हैं हसन हुसैन भी !............... जन्नती जन्नती

- वालिदैने नबी !.................... जन्नती जन्नती
- हर ज़ौजए नबी !.................. जन्नती जन्नती

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

﴾6﴿ कनीज़ को आज़ाद कर दिया

एक मरतबा नवासए रसूल, ह़ज़रते इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की ख़िदमत में एक कनीज़ ने गुलदस्ता पेश किया। आप ने उस से फ़रमाया : जा ! तू **अल्लाह** पाक के लिये आज़ाद है। अ़र्ज़ की गई : आप ने एक गुलदस्ते पर कनीज़ को आज़ाद फ़रमा दिया ? जन्नती नौ जवानों के सरदार इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने इर्शाद फ़रमाया : हमें **अल्लाह** पाक ने येही अदब सिखाया है। (التذکرۃ الحمدونیۃ،2/186)

ऐ आ़शिक़ाने इमामे हुसैन ! शहज़ादए मुश्किल कुशा, शहीदे करबला ह़ज़रते इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की मुबारक सीरत हमारे लिये क़ाबिले तक़्लीद (या'नी अ़मल करने के क़ाबिल) है, जब एक गुलदस्ता पेश करने पर आप के नवाज़ने का येह आ़लम है कि कनीज़ को आज़ाद कर देते हैं तो दीगर मुआ़मलात में कितनी बड़ी अ़त़ाएं करते होंगे। **अल्लाह** करे ! हम सब सच्चे आ़शिक़े इमामे हुसैन बन जाएं, अपने मुसल्मान भाइयों से अच्छा सुलूक करें, अपनी ज़ात के लिये बदला न लें, नफ़रत न करें और अपने दिल में किसी का बुग़्ज़ो कीना न रखें। मह़ब्बत के ज़बानी दा'वे करना तो आसान है अस्ल कमाल तो इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की सीरत पर चलना है और ऐसे ख़ुश नसीब आ़शिक़े सह़ाबा व अहले बैत का क्या कहना कि फ़रमाने इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ है : जिस ने **अल्लाह** पाक की रिज़ा के लिये हम से मह़ब्बत की हम और वोह क़ियामत के दिन यूं होंगे, शहादत और दरमियानी उंगली से इशारा फ़रमाया। (معجم کبیر،3/125،حدیث:2880)

अ़ज़ीम आ़शिक़े सहा़बा व अहले बैत मेरे शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه बारगाहे इलाही में अ़र्ज़ करते हैं :

भीक दे उल्फ़ते मुस्त़फ़ा की सब सहा़बा की आले अ़बा की
ग़ौसो ख़्वाजा की अह़मद रज़ा की मेरे मौला तू ख़ैरात दे दे

(मौला अ़ली, बीबी फ़ात़िमा, इमामे ह़सन और इमामे हुसैन عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان को "आले अ़बा" कहते हैं।)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

﴾7﴿ तीन सुवालात के दुरुस्त जवाबात

मन्क़ूल है कि नवासए रसूल ह़ज़रते इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه के पास एक आ'राबी (या'नी अ़रब के गाउं में रहने वाले) साइल ने आ कर सलाम अ़र्ज़ किया और सुवाल करते हुए कहने लगा : मैं ने आप के प्यारे प्यारे नानाजान صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से सुना है कि आप ने फ़रमाया : जब तुम्हें कोई ज़रूरत हो तो इन चार में से किसी एक शख़्स से सुवाल करो। या अहले अ़रब के शरीफ़ आदमी से, या सख़ी आक़ा से, या ह़ामिले क़ुरआन से, या फिर ऐसे शख़्स से जिस का चेहरा रोशन व मुनव्वर हो और आप में तो येह चारों अ़लामात पाई जाती हैं। क्यूं कि आप अ़रबी भी हैं और अपने नानाजान की वज्ह से शराफ़त वाले भी हैं और सख़ावत करना तो आप की आ़दते मुबारका है और क़ुरआने करीम तो आप के घर में नाज़िल हुवा है और नूरानी चेहरा, इस के मुतअ़ल्लिक़ मैं ने **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से सुना है कि जब तुम मुझे देखना चाहो तो ह़सन और हुसैन (رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا) को देख लिया करो। ह़ज़रते इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه ने फ़रमाया : तुम्हारी क्या

ज़रूरत है ? उस ने अपनी ज़रूरत लिख कर पेश कर दी। आप ने फ़रमाया : मैं तुम से तीन सुवाल करता हूं अगर तुम उन में से किसी एक का भी सहीह़ जवाब दोगे तो मेरे तमाम माल में से तिहाई (1/3) माल तुम्हारा है और अगर तुम ने दो सुवालों का जवाब सहीह़ दिया तो दो तिहाई (2/3) माल तुम्हारा है और अगर तुम ने तीनों सुवालों का दुरुस्त जवाब दे दिया तो मेरा तमाम माल तुम्हारा है और आप ने माल का थेला जिस पर इ़राक़ी मोह्‌र (Stamp) भी लगी हुई थी आ'राबी की त़रफ़ बढ़ा दिया। फिर पहला सुवाल फ़रमाया : सब से अफ़्ज़ल अ़मल क्या है ? उस ने अ़र्ज़ की : **अल्लाह** पाक पर ईमान लाना। फिर आप ने दूसरा सुवाल फ़रमाया : हलाकत से नजात किस त़रह़ मिल सकती है ? उस ने अ़र्ज़ किया : **अल्लाह** पाक पर यक़ीन रखने के सबब। फिर आप ने उस से तीसरा और आख़िरी सुवाल करते हुए इर्शाद फ़रमाया : आदमी को क्या चीज़ मुज़य्यन करती (या'नी सजाती) है ? उस ने अ़र्ज़ की : ऐसा इ़ल्म जिस के साथ ह़िल्म (या'नी बरदाश्त करने की कुव्वत) भी हो। शहज़ादए आ़ली वक़ार, करबला के क़ाफ़िला सालार, ह़ज़रते इमामे हुसैन رَضِیَ اللہُ عَنْہُ ने येह जवाब सुन कर उस से मज़ीद कुछ बातें कीं और फिर मुस्कुराते हुए माल का थेला उसे अ़त़ा फ़रमा दिया। (تفسیر رازی،پ1،البقرۃ:31،1/415) **अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।** اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّیْن صلی اللہ علیہ واٰلہ وسلم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

﴾8﴿ शरीअ़त के मस्अले पर अ़मल

शहज़ादए मुश्किल कुशा, लख़्ते जिगरे ज़हरा, इमामे करबला, इमामे हुसैन رَضِیَ اللہُ عَنْہُ के ग़ुलाम का बयान है कि मैं इमामे हुसैन رَضِیَ اللہُ عَنْہُ के साथ था कि आप का गुज़र एक घर के क़रीब से हुवा। आप ने उस घर

से पानी मांगा तो एक ख़ादिमा पियाले में पानी ले कर हाज़िर हुई जिस में चांदी की तह चढ़ी हुई थी। इमामे हुसैन رَضِیَ اللہُ عَنْہ ने पियाले से चांदी निकाल कर ख़ादिमा को दी और फ़रमाया : इसे अपने घर ले जाओ, फिर आप رَضِیَ اللہُ عَنْہ ने पानी पिया। (طبقات ابن سعد، 6/411، مطبوعہ قاہرہ مصر)

ऐ आशिक़ाने सहाबा व अहले बैत ! फ़िक़ही मस्अला येह है कि सोने चांदी के बरतन में खाना पीना और इन की पियालियों से तेल लगाना या इन के इत्रदान से इत्र लगाना या इन की अंगेठी से बख़ूर करना (या'नी धूनी लेना) मन्अ़ है और येह मुमानअ़त मर्द व औ़रत दोनों के लिये है। औ़रतों को इन (या'नी सोने, चांदी) के ज़ेवर पहनने की इजाज़त है। ज़ेवर के सिवा दूसरी त़रह़ सोने चांदी का इस्ति'माल मर्द व औ़रत दोनों के लिये ना जाइज़ है। (बहारे शरीअ़त, 3/395)

इमामे आ़ली मक़ाम, इमामे अ़र्श मक़ाम, इमामे हुसैन رَضِیَ اللہُ عَنْہ की मह़ब्बत का दम भरने वाले इस वाक़िए़ से शर्ई़ मसाइल पर अ़मल करने का ज़ेह्न बनाएं क्यूं कि शरीअ़त की पैरवी में ही मह़ब्बते इमामे हुसैन पिन्हां (या'नी छुपी हुई) है, ग़ैर शर्ई़ कामों में मश्ग़ूल होना कामिल मह़ब्बते इमामे हुसैन के मुनाफ़ी (या'नी ख़िलाफ़) है, इमामे हुसैन رَضِیَ اللہُ عَنْہ का मुबारक घराना वोह घराना है जहां से शरीअ़त के अह़काम जारी होते हैं, येह ह़ज़रात तो क़ुरआनो सुन्नत पर अ़मल करने में अपनी मिसाल नहीं रखते, वक़्ते शहादत आ चुका हो और बारगाहे इलाही में सज्दे के लिये अपना सर झुका देना इन्ही का ह़िस्सा है, करबला के तपते सह़रा में ज़ुल्मो सितम की आंधियां चलने के बा वुजूद पाक बीबियों के सब्रो हिम्मत की मिसाल तारीख़ में मिलनी दुश्वार ही नहीं क़रीब ब ना मुम्किन है। बल्कि इस मज़्लूमिय्यत के बा वुजूद पर्दा व ह़या को बर क़रार रख कर ज़माने में वोह

मिसाल क़ाइम की, कि रहती दुन्या तक लोगों के लिये एक अ़ज़ीमुश्शान रोशन मिसाल है। करबलाए मुअ़ल्ला के वाक़िआ़त से आ़शिक़ाने सहा़बा व अहले बैत को शरीअ़ते मुतह़्हरा पर अ़मल का जज़्बा बढ़ाने का ज़ेहन बनाना चाहिये। हम कैसे आ़शिक़े इमामे हुसैन हैं कि हमारे इमामे पाक अपने मुबारक सर पर इमामे शरीफ़ का ताज सजाएं और हम नंगे सर घूमने में फ़ख़्र मह़सूस करें, हम कैसे आ़शिक़े इमामे हुसैन हैं कि इमामे पाक फ़र्ज़ तो फ़र्ज़ नवाफ़िल व तिलावत की कसरत फ़रमाएं बल्कि आ़शूरा या'नी 10 मुह़र्रम, शहादत की सारी रात **अल्लाह** पाक की याद में मसरूफ़ रहें और एक हम हैं जो आ़शिक़े इमामे हुसैन कहलाते हैं लेकिन इ़बादत के लिये वक़्त ही नहीं पाते ? इमामे हुसैन की नियाज़ बिल्कुल देनी चाहिये और अगर शरीअ़त के दाएरे में रह कर रिज़ाए इलाही के लिये नियाज़ की जाए तो येह बड़े सवाब का काम है लेकिन नियाज़ की वज्ह से नमाज़ या जमाअ़त में कोताही नहीं होनी चाहिये, हमारी नियाज़ की वज्ह से मुसल्मानों के गुज़रने का रास्ता बन्द नहीं होना चाहिये बल्कि हमें तो दूसरों के लिये आसानियां पैदा करने का ज़ेहन बनाना चाहिये, ख़ानदाने रसूल की बा ह़या पाक बीबियों से प्यार करने वालियां भी ग़ौर करें कि करबला शरीफ़ में बे कसी की ह़ालत में भी उन के पर्दे में ज़र्रा बराबर फ़र्क़ नहीं आया और हम कैसी कनीज़े अहले बैत हैं ? शोपिंग सेन्टरों के चक्कर लगाना, बाज़ारों में घूमना, शादी के फ़न्कशन्ज़ में नित नए फ़ेशन अपना कर बे पर्दगी का मुज़ाहरा करना उन पाक बीबियों को किस क़दर ना पसन्द होगा।

बे बसी में भी ह़या बाक़ी रही   सब हुसैनी पर्दा दारों को सलाम

करबला का ख़ूनीं मन्ज़र रिसाले की मदनी बहार

फ़ैज़ाने इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ पाने और अख़्लाक़ो किरदार को

निखारने के लिये आ़शिक़ाने सह़ाबा व अहले बैत की दीनी तह़रीक दा'वते इस्लामी के प्यारे प्यारे दीनी माह़ोल से वाबस्ता हो जाइये, आप के दिलों में सह़ाबा व अहले बैत की मह़ब्बत बढ़ाने के लिये एक मदनी बहार पेश करता हूं :

एक इस्लामी भाई के बयान का ख़ुलासा है कि ग़ालिबन 2004 ई. की बात है फ़ैज़ाने मदीना में एक ज़िम्मादार मुबल्लिग़ (जो दा'वते इस्लामी के दीनी माह़ोल से कमो बेश 15 साल से वाबस्ता हैं) ने ह़ैरत अंगेज़ बात बताई। उन्हों ने बताया कि उन का ख़ानदान बद मज़्हबों से तअ़ल्लुक़ रखता था। बचपन ही से उन्हें येह ज़ेह्न दिया गया कि आ़शिक़ाने रसूल उ़लमाए किराम और किसी दीनदार शख़्स के क़रीब भी मत जाना वरना (مَعَاذَاللّٰہ) वोह तुम्हें गुमराह कर देंगे। ह़त्ता कि वोह किसी आ़शिक़े रसूल सुन्नी को मज़्हबी ह़ुल्ये में देखते तो (مَعَاذَاللّٰہ) उन पर आवाज़े कसते और उन का मज़ाक़ उड़ाते। वोह फ़िल्मों के बड़े शौक़ीन थे। छुट्टी के दिन दोस्तों के साथ सिनेमा घर जा कर फ़िल्म देखने का अ़र्सए दराज़ से मा'मूल था। ज़िन्दगी इसी त़रह़ ग़फ़्लत में गुज़र रही थी कि उन के नसीब जाग उठे। 1994 ई. की बात है जब वोह कॉलेज में पढ़ते थे कि उन के मामूं जो बद अ़क़ीदगी से तौबा कर के आ़शिक़ाने सह़ाबा व अहले बैत की दीनी तह़रीक दा'वते इस्लामी के दीनी माह़ोल में आ कर अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के ज़रीए सिल्सिलए आ़लिया क़ादिरिय्या रज़विय्या में दाख़िल हो कर "अ़त्तारी" बन चुके थे और सारा दिन इमामे शरीफ़ का ताज सजाए रखते थे। ग़ालिबन शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म का महीना था कि एक बार जुमुअ़तुल मुबारक के दिन सुब्ह़ के वक़्त उन के येह मामूं उन के घर आए और जाते हुए उन मुबल्लिग़ इस्लामी भाई को शहीदाने करबला رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُم से मुतअ़ल्लिक़ अमीरे अहले

सुन्नत का रिसाला तोह़फ़े में दिया। उन्हों ने येह सोच कर ले लिया कि इन के जाने के बा'द कहीं रख दूंगा। मगर बा'द में जब टाइटल पर रिसाले का नाम "**करबला का ख़ूनीं मन्ज़र**" देखा तो अपनाइयत सी मह़सूस हुई। चुनान्चे उन्हों ने रिसाला पढ़ना शुरूअ़ कर दिया। अहले बैते किराम عَلَيۡهِمُ الرِّضۡوَان से बेह़द अ़क़ीदत का इज़्हार इतने बा अदब अन्दाज़ में पहली बार पढ़ा। अन्दाज़े तह़रीर इतना पुरसोज़ व पुर तासीर था कि उन पर रिक़्क़त त़ारी हो गई और वोह करबला वालों पर होने वाले मज़ालिम को याद कर के रोने लगे। वाक़िअ़ए करबला के ज़िम्न में अमीरे अहले सुन्नत دَامَتۡ بَرَكَاتُهُمُ الۡعَالِيَه ने जिन इस्लाह़ी मदनी फूलों से नवाज़ा था उन्हों ने तो उन के ज़मीर को झंझोड़ कर रख दिया। शुहदाए करबला से मुतअ़ल्लिक़ बयानात तो बारहा सुने और पढ़े थे मगर "दर्से करबला" आज पहली बार समझ में आया था। उन की अ़जीब कैफ़िय्यत हो रही थी। उन्हों ने अपनी बहन को क़रीब बुलाया और उसे भी वोह रिसाला पढ़ कर सुनाने लगे। रिसाला सुन कर वोह भी रोने लगीं यहां तक कि उन की हिचकियां बंध गईं। اَلۡحَمۡدُلِلّٰه ! अ़ज़ीम आ़शिक़े सह़ाबा व अहले बैत, अमीरे अहले सुन्नत की तह़रीर से हाथों हाथ बरकत ज़ाहिर हुई और उन्हों ने और उन की बहन ने उसी वक़्त (बुरे अ़क़ाइद व आ'माल से) तौबा की और नमाज़ पढ़ने की निय्यत कर ली। शाम को जब उन के दोस्त ह़स्बे मा'मूल सिनेमा जाने के लिये बुलाने आए तो उन्हों ने मा'ज़िरत कर ली, उन के दोस्त ह़ैरान थे मगर उन्हों ने ज़ियादा गुफ़्तगू नहीं की।

اَلۡحَمۡدُلِلّٰه ! चन्द दिनों के बा'द उन्हों ने वोही रिसाला अपने अब्बू, अम्मी को भी सुनाया तो वोह भी बेह़द मुतअस्सिर हुए और आपस में मश्वरा कर के आयिन्दा घर में T.V. न चलाने का पक्का ज़ेह्न बना लिया।

(उस वक़्त तक इस्लामी चेनल नहीं शुरूअ़ हुवा था) जब जुमे'रात का दिन आया तो उन्हों ने घर वालों से कहा कि मैं दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में जाना चाहता हूं। येह सुन कर अम्मी ने जो कि अमीरे अहले सुन्नत का रिसाला पढ़ कर मुतअस्सिर तो हुई थीं मगर इज्तिमाअ़ में जाने की इजाज़त देने से येह कहते हुए इन्कार कर दिया कि सिर्फ़ नमाज़ पढ़ो येही काफ़ी है, इज्तिमाअ़ वग़ैरा में जाने की कोई ज़रूरत नहीं है। उन्हों ने चन्द बार अ़र्ज़ किया तो अब्बूजान ने अम्मी से फ़रमाया : अरे जाने दो, इन के मामूं भी कहते रहते हैं, वोह भी खुश हो जाएंगे। इस्लामी भाई ने मौक़अ़ ग़नीमत जानते हुए अब्बूजान को भी अपने साथ इज्तिमाअ़ में चलने की दा'वत पेश कर दी कि अब्बू आप भी चलें। बहन भी साथ देने लगीं, अब्बू कुछ तरद्दुद के बा'द बिल आख़िर चलने के लिये तय्यार हो गए।

اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! पहले ही हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शिर्कत की बरकत से उन की ज़िन्दगी में मदनी इन्क़िलाब आ गया। इज्तिमाअ़ में जन्नत के मौज़ूअ़ पर बयान हुवा, अब्बूजान के दिल में भी दा'वते इस्लामी की महब्बत पैदा हुई। اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! घर में अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के रसाइल पढ़े जाने के साथ साथ "सुन्नतों भरे बयानात" सुने जाने लगे।

इस की बरकत से न सिर्फ़ उन का पूरा घर बल्कि ख़ानदान के चन्द दीगर घराने भी बद मज़्हबिय्यत से तौबा कर के दा'वते इस्लामी के दीनी माहोल से वाबस्ता हो गए। हैरत की बात येह है कि उन के ख़ानदान में बुरक़अ़ पहनने का बिल्कुल रवाज न था और बद क़िस्मती से बुरक़अ़ पहनने को बहुत ज़ियादा मा'यूब समझा जाता था। अ़ज़ीम आशिक़े सहाबा व अहले बैत, अमीरे अहले सुन्नत की तह़रीर और बयानात ने वोह बहारें

दिखाई कि उन की बहनें बुरक़अ़ पहनने लगीं और दा'वते इस्लामी के दीनी माह़ोल से वाबस्ता हो कर ज़िम्मेदार इस्लामी बहनों के साथ सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शिर्कत करने के साथ साथ दीगर दीनी कामों में भी शामिल रहने लगीं ।

अ़ताए ह़बीबे ख़ुदा मदनी माह़ोल, है फ़ैज़ाने ग़ौसो रज़ा मदनी माह़ोल
संवर जाएगी आख़िरत اِنْ شَآءَاللہ, तुम अपनाए रख्खो सदा मदनी माह़ोल

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

﴾9﴿ अपना तमाम वज़ीफ़ा साइल को दे दिया

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! सह़ाबा व अहले बैत से मह़ब्बत का पैग़ाम आ़म फ़रमाने वाले मश्हूर वलिय्युल्लाह ह़ज़रते अ़ली बिन उ़स्मान हिजवेरी अल मा'रूफ़ दाता गन्ज बख़्श رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه अपनी मश्हूरे ज़माना किताब "कश्फ़ुल मह़्जूब" में लिखते हैं : नवासए रसूल ह़ज़रते इमामे हुसैन رَضِیَ اللهُ عَنْه की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर एक मरतबा एक शख़्स अपनी ग़ुर्बत की शिकायत करने लगा । आप رَضِیَ اللهُ عَنْه ने फ़रमाया : थोड़ी देर बैठ जाओ ! हमारा वज़ीफ़ा आने वाला है, जैसे ही वज़ीफ़ा पहुंचेगा हम आप को रुख़्सत कर देंगे । अभी कुछ ही देर गुज़री थी कि ह़ज़रते अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللهُ عَنْه की त़रफ़ से एक एक हज़ार दीनार (या'नी सोने के सिक्कों) की पांच थेलियां आप की बारगाह में पेश की गईं । लाने वाले ने अ़र्ज़ की : ह़ज़रते अमीर मुआ़विया رَضِیَ اللهُ عَنْه ने मा'ज़िरत की है कि येह थोड़ी सी रक़म है इसे क़बूल फ़रमा लीजिये । इमामे हुसैन رَضِیَ اللهُ عَنْه ने सारी रक़म उस शख़्स के ह़वाले कर दी और उस से मा'ज़िरत फ़रमाई कि आप को इन्तिज़ार करना पड़ा । (كشف المحجوب، ص77)

मीठे मीठे मुस्त़फ़ा की बारगाहे पाक में कीजिये मेरी सिफ़ारिश आप या दाता पिया

करबला वालों के ग़म से मुतअ़ल्लिक़ एक अहम फ़तवा

"फ़तावा रज़विय्या" से एक सुवाल मअ़ जवाब का ख़ुलासा पढ़िये :

सुवाल : अहले सुन्नत व जमाअ़त को अ़शरए मुहर्रमुल ह़राम में रन्जो ग़म करना जाइज़ है या नहीं ?

जवाब : कौन सा सुन्नी होगा जिसे वाक़िअ़ए हाइलए करबला (या'नी करबला के ख़ौफ़नाक क़िस्से) का ग़म नहीं या उस की याद से उस का दिल मह़ज़ून (या'नी रन्जीदा) और आंख पुरनम (या'नी अश्कबार) नहीं, हां मसाइब (या'नी मुसीबतों) में हम को सब्र का हुक्म फ़रमाया है, जज़्अ़ फ़ज़्अ़ (या'नी रोने पीटने) को शरीअ़त मन्अ़ फ़रमाती है, और जिसे वाक़ेई दिल में ग़म न हो उसे झूटा इज़्हारे ग़म रिया है और क़स्दन ग़म आवरी व ग़म परवरी (या'नी जान बूझ कर ग़म की कैफ़िय्यत पैदा करना और ग़म पाले रहना) ख़िलाफ़े रिज़ा है जिसे इस का ग़म न हो उसे बे ग़म न रहना चाहिये बल्कि इस ग़म न होने का ग़म चाहिये कि उस की मह़ब्बत नाक़िस है और जिस की मह़ब्बत नाक़िस उस का ईमान नाक़िस। (फ़तावा रज़विय्या, 24/486, 488 मुलख़्ख़सन) आ'ला ह़ज़रत, इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : (ज़िक्रे शहादत में) न ऐसी बातें कही जाएं जिस में उन की बे क़द्री या तौहीन निकलती हो। (फ़तावा रज़विय्या, 23/738)

मुकाशफ़तुल क़ुलूब में है : जान लीजिये कि आ़शूरा के दिन ह़ज़रते इमामे हुसैन رَضِیَ اللهُ عَنْه के साथ जो कुछ हुवा वोह **अल्लाह** पाक की बारगाह में आप के दरजात और रिफ़्अ़त में इज़ाफ़े की वाज़ेह़ दलील है लिहाज़ा जो शख़्स इस दिन आप के मसाइब का ज़िक्र करे उसे येह मुनासिब नहीं कि

सिवाए "اِنَّا لِلّٰهِ وَ اِنَّاۤ اِلَيْهِ رٰجِعُوْنَ" के और कुछ कहे क्यूं कि इसी में **अल्लाह** पाक का हुक्म मानना और फ़रमाने इलाही पर अ़मल करना है, जैसा कि इर्शाद होता है : ﴿اُولٰٓئِكَ عَلَيْهِمْ صَلَوٰتٌ مِّنْ رَّبِّهِمْ وَ رَحْمَةٌ ۫ وَ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُهْتَدُوْنَ﴾ (پ2،البقرۃ:157) **तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** येह लोग हैं जिन पर उन के रब की दुरूदें हैं और रह़मत और येही लोग राह पर हैं। (مکاشفۃ القلوب، ص312)

आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه शाने सह़ाबा व अहले बैत बयान करते हुए लिखते हैं :

उन के मौला के उन पर करोड़ों दुरूद उन के अस्ह़ाबो इ़तरत पे लाखों सलाम

अल ग़रज़ उन के हर मू पे लाखों दुरूद उन की हर ख़ू व ख़स्लत पे लाखों सलाम

उस शहीदे बला शाहे गुलगूं क़बा बे कसे दश्ते ग़ुर्बत पे लाखों सलाम

हर सह़ाबिये नबी !....... जन्नती जन्नती ह़ज़रते सिद्दीक़ भी !... जन्नती जन्नती
और उ़मर फ़ारूक़ भी !.. जन्नती जन्नती उ़स्माने ग़नी !....... जन्नती जन्नती
फ़ातिमा और अ़ली !... जन्नती जन्नती हैं ह़सन हुसैन भी !....... जन्नती जन्नती
वालिदैने नबी !........... जन्नती जन्नती हर ज़ौजए नबी !....... जन्नती जन्नती

फ़ेहरिस

शाने इमामे हुसैन 1
बड़े भाई का अदब 2
बड़ा भाई वालिद की जगह होता है 4
बड़े भाई से मह़ब्बत का निराला अन्दाज़ ...5
सह़ाबए किराम और शहज़ादए आ़ली मक़ाम की मह़ब्बत 6
मक़ामे इमामे हुसैन 7
कनीज़ को आज़ाद कर दिया 8
तीन सुवालात के दुरुस्त जवाबात 9
शरीअ़त के मस्अले पर अ़मल 10
करबला का ख़ूनीं मन्ज़र रिसाले की बहार 12
अपना तमाम वज़ीफ़ा साइल को दे दिया..16
एक अहम फ़तवा..........................17

ٱلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ ؕ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

फ़रमाने अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

''जन्नत'' सादाते किराम के क़दमों के सदक़े से मिलेगी।

(20 रमज़ानुल मुबारक 1442 हि. रात)